महिलाओं की भागीदारी

यह वाकई चिंता की बात है कि महिला सशक्तीकरण के तमाम प्रयासों के बावजूद देश की कुल श्रमशक्ति में औरतों की भागीदारी कम हो रही है। वर्ल्ड बैंक ने अपनी 'इंडिया डिवेलपमेंट रिपोर्ट' में कहा है कि वर्कफोर्स में महिलाओं की भागीदारी के मामले में भारत काफी पीछे है। इस मामले में 131 देशों की सूची में वह 120 वें स्थान पर है। अव्वल तो नौकरियां हैं ही नहीं, और जो हैं भी, उनमें पुरुषों को प्राथमिकता दी जाती है। श्रमशक्ति में औरतों की भाग़ीदारी 2005 के बाद से ल÷ातार कम हुई है, जबकि देश में 42 फीसदी स्त्रियां ग्रैजुएट हैं। अभी महिलाओं को सबसे ज्यादा काम कृषि क्षेत्र में ही मिल पा रहा है। इंडस्ट्री और सर्विस सेक्टर में उनकी उपस्थिति महज 20 फीसदी है। विश्व बैंक का मानना है कि मौजूदा वित्त वर्ष में भारत की आर्थिक वृद्धि दर 7.2 फीसदी रह सकती है, लेकिन अगर अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी बढ़ा दी जाए तो जीडीपी में दहाई की वृद्धि सुनिश्चित की जा सकती है। निश्चित रूप से यह हमारे लिए एक सबक है। भारत की विकास प्रक्रिया सही मायने में अपने मुकाम पर तभी पहुंचेगी, जब महिलाएं इसका अनिवार्य हिस्सा बनेंगी। वर्कफोर्स में महिलाओं की कम मौजूदगी की सबसे बड़ी वजह लैंगिक असमानता है। हमारा सिस्टम उनके प्रति सेंसेटिव नहीं हो पाया है। हाल तक लड़कियों को शिक्षा प्राप्त करने से रोका जाता था। अब सरकार के प्रयासों से हर वर्ग की लड़कियां स्कूल-कॉलेज जाने लगी हैं, लेकिन उनमें भी ड्रॉपआउट की संख्या बहुत ज्यादा रहती है। लड़कियां अनेक कारणों से बीच में ही पढ़ाई छोड़ देती हैं। खेत में भी काम करने की आजादी सबको नहीं है। कुछ के लिए तो यह सिर्फ एक मजबूरी है। शिक्षित स्त्रियों के एक बड़े तबके को अब भी नौकरी करने से रोका जाता है। बहुत सारी महिलाओं को करियर के बीच में ही काम छोड़ना पड़ जाता है। इसका कारण आम तौर पर प्रेग्नेंसी होती है, जिसे लेकर कंपनियों, संस्थानों के नियम-कायदे प्रायः स्त्री के अनुकूल नहीं हैं। जाहिर है, उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाओं का शादी के बाद घर बैठ जाना बहुत बड़े स्तर पर टैलंट की बर्बादी है। नौकरी में भेदभाव भी एक बड़ी समस्या है। एक ही काम के लिए महिलाओं को पुरुषों के मुकाबले कम वेतन मिलता है। सैलरी में भेदभाव के अलावा प्रमोशन में भी पक्षपात देखने को मिलता है। यही वजह है कि करियर के ऊंचे पायदानों पर उनकी संख्या कम होती जाती है। ऐसा तब है जब महिलाएं सभी क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रही हैं। असुरक्षित माहौल और कमजोर इंफ्रास्ट्रक्चर के कारण भी कई महिलाओं को नौकरी छोड़नी पड़ती है। महिलाओं के लिए बनी तमाम स्कीमों और कानूनों का सख्ती से पालन जरूरी है। इसके साथ ही कानून-व्यवस्था को भी चाक-चौबंद बनाया जाना चाहिए, तभी महिलाओं का वर्कफोर्स में प्रतिनिधित्व बढ़ेगा।

जीवन से जुड़े जीएम सरसों के सवाल

सरसों की जेनेटिकली मॉडीफाइड किस्म यानी डीएमएच-11 मस्टर्ड को दिल्ली यूनिवर्सिटी के साइंसदानों ने विकसित किया है। अब इसे उगाने की इजाजत सर्वोच्च न्यायालय ने भी दे दी है। उम्मीद है सब कुछ ठीक रहा तो आगामी रबी के मौसम में व्यावसायिक तौर पर इसकी फसल बोने का काम शुरू हो जाएगा। अरुणा रोड्रिग्स जो एक बायो-टेक्नोलॉजिस्ट के अलावा पर्यावरण-बचाओ कार्यकर्ता भी हैं, ने पिछले साल जीएम मस्टर्ड की व्यावसायिक बुवाई पर रोक लगाने के लिए अदालत में केस दायर किया था। हाल ही में जीईएसी (जेनेटिक इंजीनियरिंग अप्रेजल कमेटी) ने जीएम मस्टर्ड की व्यावसायिक खेती को निरापद घोषित करते हुए इसे पर्यावरण मंत्रालय की मंजूरी के लिए भेज दिया था। भारत में कई सालों से जीएम फसलों को लेकर संशय छाए रहे हैं। आपको याद होगा कि वर्ष 2010 में बीटी बैंगन की खेती के लिए हरी झंडी दे दी गई थी, लेकिन बाद में इस पर रोक लगा दी गई। लोग या तो जीएम खाद्य पदार्थों के पक्ष में हैं या फिर विरोध में रहे हैं। केंद्र सरकार को तुरंत निर्णय लेने की जरूरत है क्योंकि कृषि क्षेत्र में उत्पादन संबंधी अनेक समस्याएं हैं, खासकर मौसम में बदलाव और तेजी से बढ़ते शहरीकरण की वजह से गिरता कृषि उत्पादन। तेजी से बढ़ती खाद्य पदार्थों की मांग को लेकर कई लोगों का मानना है कि जीएम फसलों में इस समस्या का समाधान छिपा है।

जीएम खाद्यान्न कोई भावुकता या राजनीतिक मुद्दा नहीं है और इस पर पूरी तरह वैज्ञानिक नजरिये से सोच-विचार करने की जरूरत है। कोई भी इस बात पर राजी होगा कि परीक्षण के दौरान जीएम भोजन खाने से चूहों में ट्यूमर (ग्रंथियां) और कैंसर जनित रोगों के लक्षण पाए गए हैं। जीएम फसलों के समर्थक इसे निरापद बताते हैं। संघ की आर्थिक इकाई स्वदेशी जागरण मंच तो जीएम बीजों का विरोध करती ही आयी है, इसके अतिरिक्त भारतीय किसान यूनियन आदि भी इसकी राह में बड़ी रुकावट बनी हुई है। अनेक देशों के अनुभव के आधार पर जीएम भोजन को इनसान के उपयोग के लिए सुरक्षित बताया गया है।

अमेरिका और कनाडा में उगने वाली सारी मक्की और सोयाबीन जीएम फसलें ही हैं। हालांकि यूरोपियन यूनियन के कई देशों ने जीएम फसलों पर प्रतिबंध लगा रखा है। वैज्ञानिकों की राय है कि इनसान अपने मुताबिक चुन-चुनकर फसलें उगाता आया है और हजारों सालों से पौधों के जीनोम को अपनी इच्छा अनुसार परिवर्तित करता आया है। पिछले लगभग 60 सालों से वैज्ञानिक पौधों के डीएनए में म्यूटेशन तकनीक के अंतर्गत रेडियशन और रसायनों के माध्यम से बदलाव ला रहे हैं। इसके चलते गेहूं, धान, मूंगफली और नाशपाती की विकसित की गई नयी नस्लें अब बाजार में मिलना आम बात है। जीएम तकनीक वैज्ञानिकों को किसी पौधे के जीनोम को एकल-जीन या मिश्रित-जीन वाले पौधे में संकरित करने की समर्था प्रदान करती है। यहां तक कि यह काम बैक्टीरिया, वायरस या किसी प्राणी के जीन के जरिए भी किया जा सकता है। यह भी हो सकता है कि इस प्रक्रिया का कोई दीर्घकालीन असर हो, जिसका पता आने वाले समय में सामने आए। स्वास्थ्य और पर्यावरण पर पड़ने वाले असर को एक तरफ रखकर यदि हम जीएम फसलों का संपूर्ण आकलन करें तो याद रखना होगा चूंकि यह मामला इनसान की खाद्य शृंखला से जुड़ा है, इसलिए अत्यंत सावधानी बरतने की जरूरत है। अरुणा रोड्रिग्स के मुताबिक जीएम फसल अपने पास-पड़ोस स्थित पौधों को भी संदूषित कर देती हैं, जिससे जैव-विविधता को खतरा पैदा हो जाता है। वे जीईएसी की पारदर्शिता को लेकर आलोचना यह कहकर करती हैं कि इसने जीएम सरसों पर जैव-सुरक्षा को लेकर पूरे तथ्य अपनी वेबसाइट पर जानबूझकर नहीं डाले हैं और ऐसा करके केंद्रीय सूचना आयोग के दिशा-निर्देशों का उलंघन किया है।

जीएम फसल के विरोधी कहते हैं कि इनसे एक ऐसी सुपर-खरपतवार पैदा होती है जो अन्य फसलों को लील लेती है। जिसका तोड़ निकट भविष्य में नहीं हो सकता। जीएम फसल से नॉन-टारगेट जैवकीय शृंखला पर नकारात्मक असर पड़ता है, जिसके अंतर्गत परंपरागत फसलों की हानि और स्थानीय फसलों को जीएम फसल हड़प लेती है। इसके अलावा खेती में और ज्यादा रसायनों के इस्तेमाल का भी खतरा मंडराएगा।बायो-टेक्नोलॉजिस्ट पुष्पा भार्गव के अनुसार मनुष्यों के शरीर पर जीएम फसल से पड़ने वाले असर में एलर्जी और बच्चों में कैंसर की संभावना के अलावा इनसानों में मौजूद एंटी-बायोटिक दवाओं के प्रति प्रतिरोधकता बनने की संभावना बन जाती है। जीएम सरसों के समर्थक कहते हैं कि चूंकि इसका संवर्धन पूरी तरह से भारतीय कृषि वैज्ञानिकों ने किया है, इसलिए यह कहना कि इसमें अतर्राष्ट्रीय कपंनी मोंसेंटो की तर्ज पर रॉयल्टी का खेल है तो यह बात सिरे से गलत है। वर्ष 2016 में मोंसेंटो ने भारत में अगली पीढ़ी के जीएम कॉटन के बीज के वितरण की अनुमति को लेकर दी अपनी अर्जी वापिस ले ली थी। बॉलार्ड-1 नामक बीटी कॉटन पहली ऐसी जीएम फसल थी जिसकी अनुमति भारत सरकार ने वर्ष 2002 में दी थी, इसके बाद वर्ष 2006 में बॉलार्ड-2 नामक अगली पीढ़ी का बीटी-कॉटन बीज भारत में उतारा गया था। बीटी कॉटन की वजह से देश में कपास के उत्पादन में प्रति एकड़ के हिसाब गुणात्मक वृद्धि हुई है और इसी अनुपात में निर्यात भी बढ़ा है। इससे रॉयल्टी के रूप में मोंसेंटो ने भारी मुनाफा भी कमाया था, लेकिन जब सामने आया कि इससे उगी कपास में पिंक बॉलवॉर्म नामक कीड़ा लग रहा है तो सरकार ने मोंसेंटो की रॉयल्टी को कम करते हुए बीटी कॉटन के बीज की ऊपरी कीमत तय करने का निर्देश दिया था। यह फैसला मोंसेंटो की भारतीय इकाई 'माहीको मोंसेंटो बायटेक' को नामंजूर था, लिहाजा उसने अपनी अर्जी वापिस ले ली थी। अब अगर जीएम सरसों का व्यावसायिक उत्पादन होता है तो यह ऐसी जीएम खाद्य फसलों के नये काल का सबब बनेगा जो सूखा और कीट-रोधी तो होंगे ही, साथ ही उत्पादन भी इनसे ज्यादा होगा। कयास है कि इससे भारत में सरसों के कुल उत्पादन में लगभग 30 फीसदी का इजाफा होगा। फिलहाल भारत को सूखे और कीटों की मार की वजह से क्रांतिकारी तकनीक वाली कृषि की जरूरत है और इन समस्याओं से ग्रस्त होकर न सिर्फ फसल तबाह होती है बल्कि किसान की आमदनी भी कम हो जाती है, जिससे कर्ज के मकड़जाल में दबकर होने वाली आत्महत्याओं का आंकड़ा बढ़ता जा रहा है। नीति आयोग भी जीएम फसलों के पक्ष में रहा है ताकि साल भर में प्रति एकड़ कई फसलें लेकर कृषि उत्पादन को बढ़ाया जा सके। वैसे भी पिछले साल सरसों ने अच्छा मुनाफा कमाया था। सस्ते पाम ऑयल की वजह से खाद्य तेल आयात पर हमारी निर्भरता बढ़ती जा रही है और इसके चलते तिलहन की बुवाई वाले इलाकों में किसानों का रुझान अन्य फसलों की तरफ होने से इनके उत्पादन में कमी आई है। कई कृषि वैज्ञानिकों ने जीएम फसलों से ज्यादा उत्पादन के दावे की सत्यता और लंबे समय तक इनकी व्यवहार्यता बने रहने पर सवाल उठाया है। भारत में जीएम खाद्यान्नों की निरापदता को लेकर सुबूत पेश किए जाने बहुत जरूरी हैं। यहां पर सवाल जीएम बीज बैंक और उनके संरक्षण का भी उठ खड़ा होगा। 2014 में भाजपा के चुनाव घोषणापत्र में इस बारे में साफ किया गया था : 'लंबे समय तक मिट्टी, उत्पादन की मात्रा और उपभोक्ता पर पड़ने वाले जैविक प्रभावों का पूरी तरह से वैज्ञानिक आकलन होने के बाद ही जीएम फसलों को मंजूरी दी जाएगी।' इसलिए इनका उत्पादन किए जाने से पहले लोगों की राय लेनी चाहिए। उन्हें पता होना चाहिए कि जो कुछ उन्हें खिलाया जा रहा है, वह आखिर है क्या।

आ गया मॉनसून

मौसम विभाग की भविष्यवाणी के अनुरूप मॉनसून ने मंगलवार को केरल और नॉर्थ-ईस्ट में एक साथ दस्तक दे दी। अमूमन यह 1 जून को केरल के तटवर्ती इलाकों को छूता है। उम्मीद की जा रही है कि जून के पहले हफ्ते में यह देश के दक्षिणी और पश्चिमी हिस्सों को अपने प्रभाव में ले लेगा। मौसम विभाग ने इस बार पिछले 50 वर्षों की औसत बारिश की 96 फीसदी बरसात होने की भविष्यवाणी की है। 2014-15 और 2015-16 के दो लगातार सूखों के बाद इस साल की संभावित अच्छी बारिश खेती के लिए ही नहीं, पूरी अर्थव्यवस्था के लिए अच्छी खबर है। इस खबर के बल पर ही पिछले कुछ दिनों से सेंसेक्स भी चढ़ता नजर आ रहा है। जब सब इस खुशी में झूमते दिख रहे हों तब कड़वी बातों का जिक्र करना भला किसे अच्छा लगेगा। लेकिन सच्चाई को भुलाना किसी समस्या का हल नहीं है, इसलिए हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि फीसदी में मॉनसून का हिसाब बहुत ज्यादा मायने नहीं रखता। अहम सवाल यह है कि इस 96 फीसदी बारिश का देश के अलग-अलग हिस्सों में कैसा बंटवारा होता है। अगर किसी इलाके में बहुत ज्यादा बारिश हो जाए और किसी अन्य इलाके में बूंद भी न पड़े तो औसत अच्छा ही बना रहेगा, लेकिन देश का एक हिस्सा सूखे का तो दूसरा बाढ़ का संकट झेलेगा। गौरतलब है कि पिछले साल मौसम विभाग ने औसत से अच्छी बारिश की भविष्यवाणी की थी, जिसे बाद में संशोधित करके औसत बारिश का रूप दिया गया था। लेकिन इस संतोषजनक खबर के बावजूद तमिलनाडु, केरल और कर्नाटक के विभिन्न हिस्सों में सूखे जैसे हालात बने रहे।

नहीं जान-पहचान, कटेगा चालान

बड़ 'प्रयत्न' स उन्ह पुालस का नौकरी मिली। ट्रेनिंग के बाद पहली पोस्टिंग अपने शहर में हो गई। छोटा शहर रहा, वे नाके पर डट गए। नयी-नयी नौकरी का उत्साह उमड़ पड़ा था, ड्यूटी निभाने का जुनून। पहला बंदा रोका-बोले दिखाओ पेपर्स। हमने आज तक तो दिखाए नहीं, घर पर संभाल कर रखे हैं। समझाया साथ रखने चाहिए, चालान होगा। आज तक हुआ नहीं, हमारी पत्नी इस वार्ड की कमिश्नर हैं। प्रदेश में सरकार भी हमारी है। किसी से बात कराऊं। इनका चालान नहीं कर सकते, कर भी देंगे तो बाद में ...। एक और सज्जन जा रहे बिना हेलमेट। उन्हें रोका-भैया हेलमेट कहां है। बोले -रिपेयर को देकर आए हैं। चालान होगा। हेलमेट तो है ना, अब ठीक भी तो करवाना पड़ेगा। आप नए हा, हमार मामाजी यहां के एक्स एमएलए हैं। बात करवा दें। चालान करने वाले ने सही सोचा, पहले वे बात करेंगे, फिर किसी स्टाफ वाले का फोन आ जाएगा। आप जाइए। वे तीसरे बंदे का इंतजार करने लगे। एक कार को रोका। बताया आपके पास पोल्यूशन का सर्टिफिकेट नहीं है। बोले-हम शहर के व्यापार मंडल के प्रधान हैं। हमें पता है हमारी कार पोल्यूशन नहीं फैलाती। जो कारखाने ऐसा करते हैं, नदियों में कैमिकल डाल देते हैं, उनका चालान कोई नहीं करता। ये विपक्ष वाले पिछले सत्तर साल से राजनीतिक प्रदूषण फैला रहे थे, इनका चालान कीजिए। आप कभी सेवा का मौका दो। मैं होलसेलर हूं, चाहो तो किसी से बात करवाऊं।

बड़ी सोच

जब मौलाना अबुल कलाम आजाद की पत्नी बेगम आजाद का कलकत्ता में देहांत हुआ, उस समय मौलाना आजाद अहमदाबाद की जेल में कैद थे। कृतज्ञ देशवासी बेगम आजाद की स्मृति में स्मारक बनाना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने बेगम आजाद स्मृति कोष बनाया और धन इकट्ठा करने लगे। जब मौलाना आजाद जेल से छूटकर आए तो उन्हें इस बात का पता चला। उन्होंने तत्काल कहा, ''बेगम आजाद स्मृति कोष बंद किया जाए और इस कोष में इकट्ठे धन को इलाहाबाद के कमला नेहरू अस्पताल को दे दिया जाए। इस तरह उस धन से कमला नेहरू अस्पताल में ''बेगम आजाद'' कक्ष बनवाया गया।

आत्मज्ञान का सुख

दार्शनिक युआन सीन चीन में लू नामक एक पिछड़ी बस्ती में रहते थे। वे ध्यान करते थे और समय मिलने पर अपना इकतारा बजा लेते थे। एक दिन अमीर त्सी कुंग अपनी शानदार बग्घी में बैठकर उनसे मिलने आए। गली इतनी छोटी थी कि उनकी बग्घी उसमें प्रवेश नहीं कर सकी। मजबूर हो उन्हें पैदल ही जाना पड़ा। युआन अतिथि का स्वागत करने दरवाजे पर आए। फटा जूता, पत्तों की टोपी, फटे-पुराने कपड़े, यह सब देख कुंग ने कहा-ओह संत, आप इतने दुखी, दरिद्र और संकटग्रस्त हैं? युआन मुस्कराए और बोले-संसार की नजर में मैं गरीब हो सकता हूं, पर दरिद्र, दुखी या संकटग्रस्त नहीं हूं। दुखी वे हो सकते हैं जो अज्ञानी हों। मैं भी तुम्हारी ही तरह अमीर हूं, फर्क इतना है कि तुम्हारे पास रुपया-पैसा है और मेरे पास आत्मज्ञान का सुख है। तुम्हारा पैसा नष्ट हो सकता है पर मेरा सुख नहीं।

राशिफल

मेष- बढ़ते हुए आर्थिक कष्ट से मुक्ति मिलेगी। आज दूर की यात्रा भी हो सकती है। छोटे मोटे पार्ट टाईम कारोबार के लिए भी समय निकालना आसान रहेगा। महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति का दिन है अतः प्रयत्नशील रहें।

वृष- आज आपके परिवार में किसी मांगलिक कार्य के आयोजन की चर्चा चलेगी। अपने जीवन स्तर को सुधारने के लिए फिलहाल आपको स्थायी प्रयोग में आने वाली वस्तुओं की खरीदारी करनी चाहिए।

मिथुन-आपकी अप्रत्याशित उन्नति के देख कर सभी हैरान होंगे। स्वयं आपकी नजर भी अपनी उपलब्धियों को लग सकती है। प्रगति की इस गति को स्थायी रखना आपका प्रमुख कार्य होना चाहिए अन्यथा आगे चलकर प्रतिष्ठा को धक्का लग सकता है।

कर्क- आज का दिन किसी बहन-भाई की चिन्ता या सेवा में व्यतीत होगा। उनकी चिन्ता आपको परेशान कर सकती है। सब की सहमति से कहीं स्थान परिवर्तन का विचार बनाएं।

सिंह- आज कारोबार की चिन्ता विशेष रूप से परेशान करेगी। अस्थिरता आपका पीछा नहीं छोड़ रही है। नौकरी - व्यवसाय के क्षेत्र में पूर्ण सुधार के लिए आलस्य त्यागना पड़ेगा।

कन्या- विशेष प्रकार की भागदौड़ आपको करनी पड़ेगी। उसके नतीजे भी लाभदायक होंगे। कुछ समय बाद बेहतरीन अनुबंध आपको प्राप्त होगा।

तुला- आज आप अकारण ही परेशान रहेंगे। सामाजिक और व्यवसायिक क्षेत्र में विरोधियों की भीड़ आपके सामने खड़ी हो सकती है। आप अपने साहस और बुद्धिमानी से ही इन लोगों को पराजित कर सकते हैं।

वृश्चिक- आज अकस्मात मंगलमय समाचार मिलेगा। कार्यक्षेत्र में आए तनाव को अपने ऊपर हावी न होने दें। बनते-बिगड़ते परिवेश में नवीन योजना सफल होगी। पुराने झंझटों से छुटकारा मिलेगा।

धनु- आज आपको किसी नए संपर्क से लाभ मिलेगा। रूका हुआ धन कठिनाई से मिलेगा। रोजमर्रा के कामों में कोताही न बरतें। व्यवसायिक उन्नति से आत्म विश्वास में वृद्धि होगी।

मकर- ग्रहचाल भाग्य विकास में सहायक है। क्रय -विक्रय के व्यवसाय में लाभ होगा। शुभ समाचार भी दिन भर प्राप्त होते रहेंगे। व्यर्थ के झंझटों से बचे रहें।

कुंभ- उच्चाधिकारियों की घनिष्टता से लाभ उठाने का अवसर आज दिनभर बना रहेगा। आयात- निर्यात के व्यवसाय आरंभ करने का निर्णय भी आज हो सकता है।

मीन- विवादास्पद प्रकरण समाप्त होंगे। गुप्त शत्रु व ईर्षालु साथियों से सावधान रहें। किसी को आज रूपया उधार न दें वापस नहीं मिलेगा।

शब्द सामर्थ्य

शब्द सामर्थ्य -070(Rns) (भागवत साहू)

बाएं से दाएं
1. व्यर्थ, अकारण, बेवजह (उर्दू) 4. साथ में, सहित 5. वर्षा, बारिश, बरखा 8. कथा, किस्सा 9. चिढ़चिड़ा, बदमिजाज 11. प्रलय, आफत, हलचल 12. लाख ढकने का कपड़ा 13. पिता, क्लर्क, सम्मानित व्यक्ति 14. वायु, पवन 16. निवास करना, उपस्थित होना, ठहरना 18. जिसे लात खाने की आदत हो गई हो 19. सेवक, दास, चाकर 21. भ्राता 22. मेघ, जलद, नीरद।

ऊपर से नीचे
1. विशेष, विशिष्ट 2. सुगंध, खुशबू 3. आदमी, मनुष्य, मानव 5. अपेक्षाकृत, अपेक्षया 6. कष्ट, दर्द, दिक्कत 7. पठन, पढ़ने का काम, शिक्षा 10. किस्मत, नसीब, भाग्यवान 12. एक पक्षी जो पुराने समय में संदेश वाहक का काम करता था 13. बाल, बच्चा, लड़का, छोकरा 17. वायु संबंधी, हवा में रहने, उड़ने या होने वाला, बिलकुल काल्पनिक और निर्मूल 19. नाव, कश्ती 20. वर्ष, बरस, एक इमारती वृक्ष।

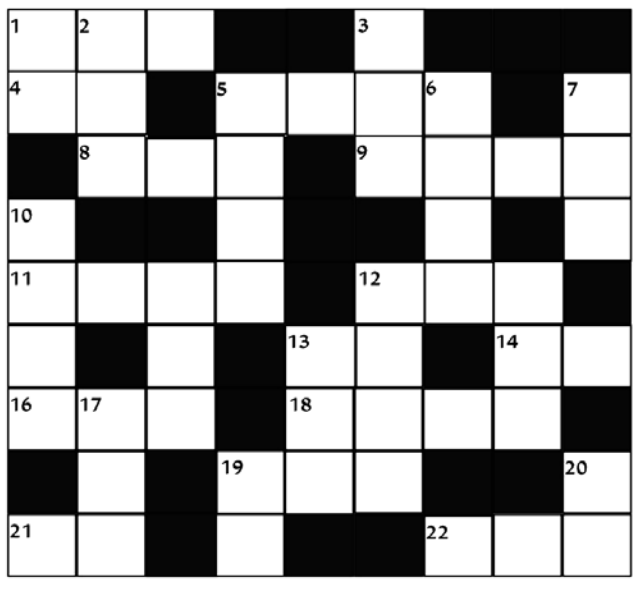

पिछले अंक का हल

पं	क्ति		स्वा	द		स	ब	ब
जा		सु	हा	ना			ली	द
ब	हु	धा		द	ल	ना		ल
		क	मा	न		ग	ह	ना
भं	व	र				वा	म	
गी	त		म	ज	बू	र		ट
	न	म	स्का	र				र
		र्या			बी		ना	का
सं	वि	दा		ब	स	च	ल	ना

सू-दोकू

	2		6		8		3	
9		8		3		4		
							5	
5		2			7		6	
	8		4			1		3
				9				
8			9				1	
	5			1		6		2
		1	7				4	

नियम
1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

पिछले अंक का हल

2	6	3	8	1	4	9	7	5
9	5	4	2	6	7	3	1	8
8	7	1	9	3	5		6	2
6	2	7	5	4	8	4	3	9
3	9	8	6	7	1	2	5	4
4	1	5	3	2	9	6	8	7
5	3	2	4	8	6	7	9	1
1	8	6	7	9	2	5	4	3
7	4	9	1	5	3	8	2	6